उत्पत्ति १२: वाचा

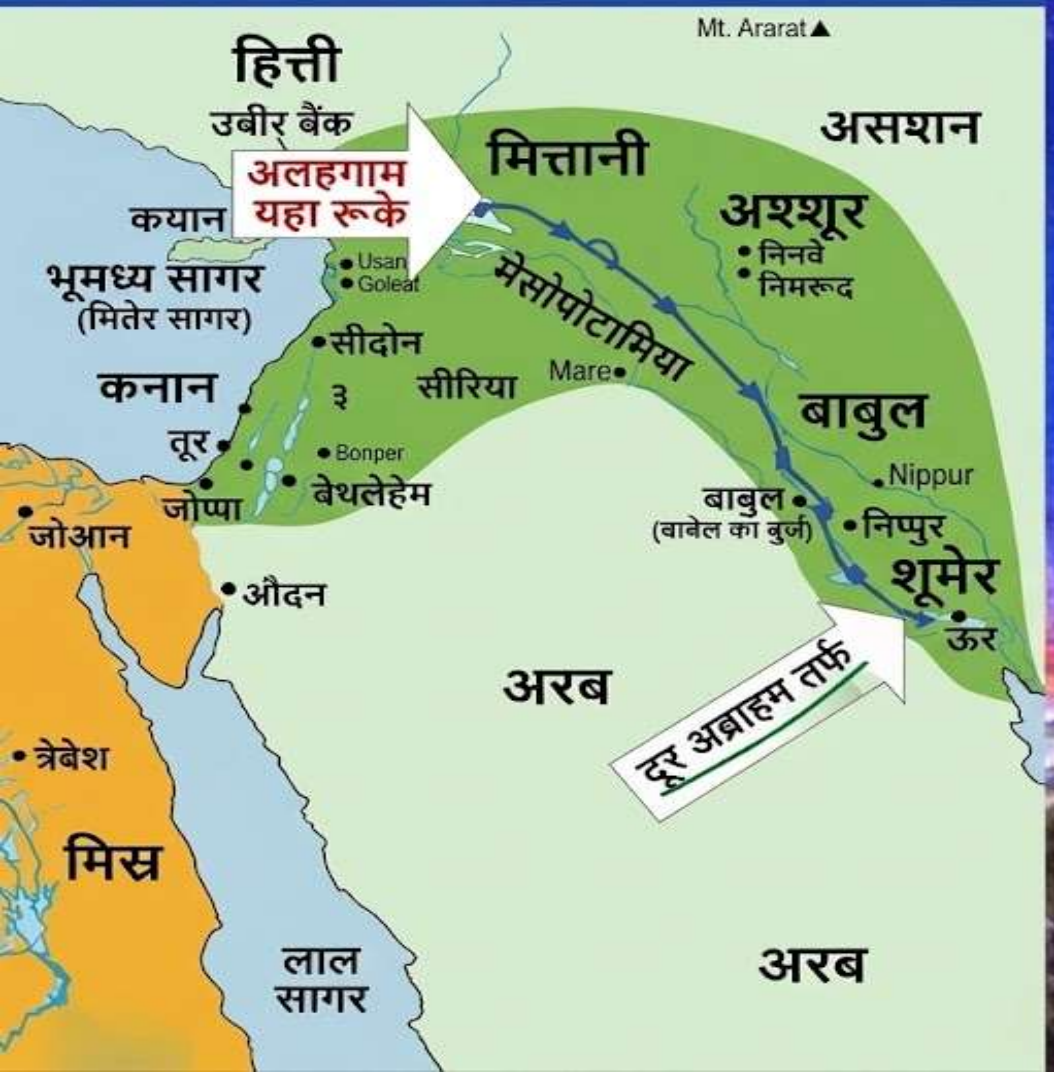
Mt. Ararat
हित्ती
उबीर बैंक
अलहगाम
यहा रूके
मित्तानी
असशान
कयान
अश्शूर
निनवे
निमरूद
भूमध्य सागर
(मितेर सागर)
Usan
Goleat
मेसोपोटामिया
सीदोन
कनान
३
सीरिया
Mare
बाबुल
तूर
Bonper
Nippur
जोप्पा
बेथलेहेम
बाबुल
(बाबेल का बुर्ज)
निप्पुर
जोआन
शूमेर
औदन
ऊर
अरब
दूर अब्राहम तर्फ
त्रेबेश
मिस्र
लाल
सागर
अरब

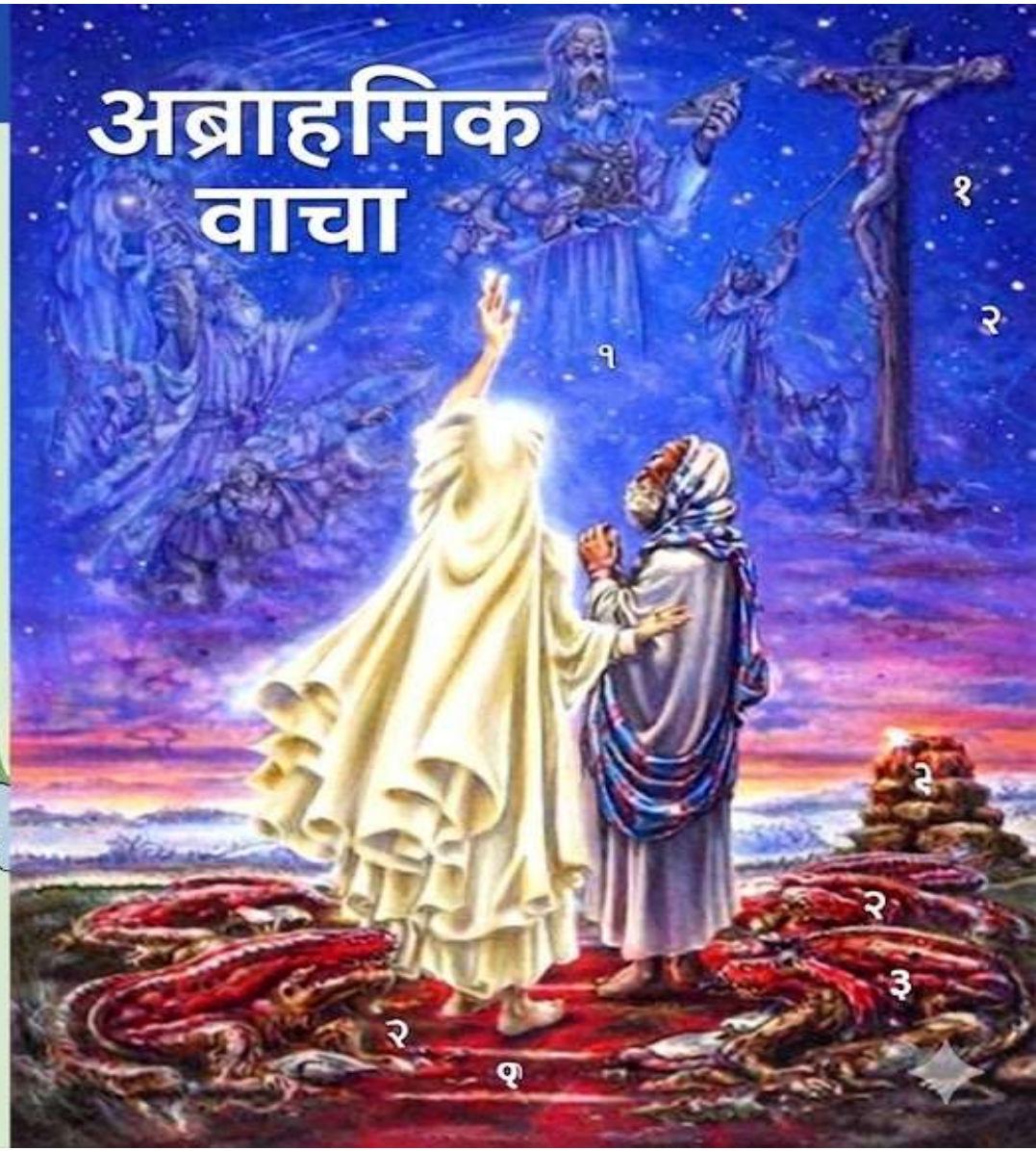
अब्राहमिक
वाचा
१
२
१
२
२
३
२
१

वाचा

१. अब्राहम एक महान जाति (राष्ट्र) बनेगा।

२. परमेश्वर अब्राहम को आशीष देगा, और वह स्वयं एक आशीष ठहरेगा।

३. जो अब्राहम को आशीष देंगे, उन्हें परमेश्वर आशीष देगा, और जो उसे कोसेगा, उसे परमेश्वर शाप देगा।

४. अब्राहम का नाम (ख्याति) महान हो जाएगा।

५. परमेश्वर अब्राहम के द्वारा सभी जातियों (कुटुंबों) को आशीष देगा।

वाचा क्या है?

- वाचा वह साधन है जिसके द्वारा परमेश्वर ने अपनी पृथक की हुई प्रजा को स्थापित किया
- वेबस्टर के अनुसार वाचा एक समझौता है जिसमें चर्च के सदस्य किसी सिद्धांत की रक्षा के लिए एक साथ बंधते हैं। साथ ही, यह एक संविदा भी है।
- वेबस्टर की परिभाषा बाइबल की वाचा की परिभाषा नहीं है!
- बाइबल की वाचा पवित्र थी

- मनुष्यों के बीच की वाचाएँ भूमि बेचने, संधियाँ करने, और कुएँ के पानी के उपयोग की अनुमति देने के लिए की जाती थीं.....
- आपसी समझौता..... दोनों पक्षों पर दायित्व होते थे
- एक पक्ष..... वाचा किसी पर लाद दी जाती थी
- हम वाचा को प्रायः एक प्रतिज्ञा या संविदा के रूप में समझते हैं
- संविदाएँ और प्रतिज्ञाएँ तोड़ी जा सकती हैं, आमतौर पर केवल छोटे दंड के साथ
- **बाइबल की वाचा के साथ ऐसा होना असंभव है!**

इब्री भाषा में वाचा को "ब्रित" कहा जाता है

- इब्री भाषा में बाराह का अर्थ है — काटना या विभाजित करना
- यूनानी भाषा में नये नियम में प्रयुक्त शब्द डायथेके है
- डायथेके शब्द वास्तविक अर्थ को बहुत हद तक छोड़ देता है
- भाषा और संस्कृति एक साथ जुड़ी हुई पैकेज हैं
- विभिन्न संस्कृतियाँ और उनकी भाषाएँ अद्वितीय अवधारणाएँ रखती हैं, जो अन्य संस्कृतियों में प्रायः नहीं पाई जातीं
- कुछ इब्री अवधारणाएँ जैसे ब्रित, शलोम, या मसीह अन्य भाषाओं में कोई समानार्थी शब्द नहीं रखतीं
- जब किसी संस्कृति में कोई अवधारणा नहीं होती, तो उस अवधारणा के लिए उस भाषा में कोई शब्द भी नहीं होता!

संस्कृति को समझना अत्यन्त महत्वपूर्ण है

- बाइबल के अनुवाद में मुख्य समस्या यह है कि अनुवादक को संस्कृति की गहरी जानकारी नहीं होती
- ईसाई यह विश्वास करते रहे हैं कि “वसीयत” या “टेस्टामेंट” आधुनिक समय की वाचा का समानार्थी है..... यह सत्य नहीं है!
- बाइबल की वाचा स्थायी होती है, जब तक वह शर्तों वाली न हो
- एक स्थायी वाचा को वापस नहीं लिया जा सकता
- मृत्यु वाचा तोड़ने की सजा थी!

परमेश्वर द्वारा बनाई गई वाचा ब्रह्मांड का भौतिक नियम बन जाती है

- ब्रित शब्द “प्रकृति के नियमों” के अर्थ में भी प्रयुक्त होता है
- परमेश्वर की वाचा ब्रह्मांड की रचना में बुनी गई है
- आध्यात्मिक संसार ही परमेश्वर की वाचा का मूल स्रोत है

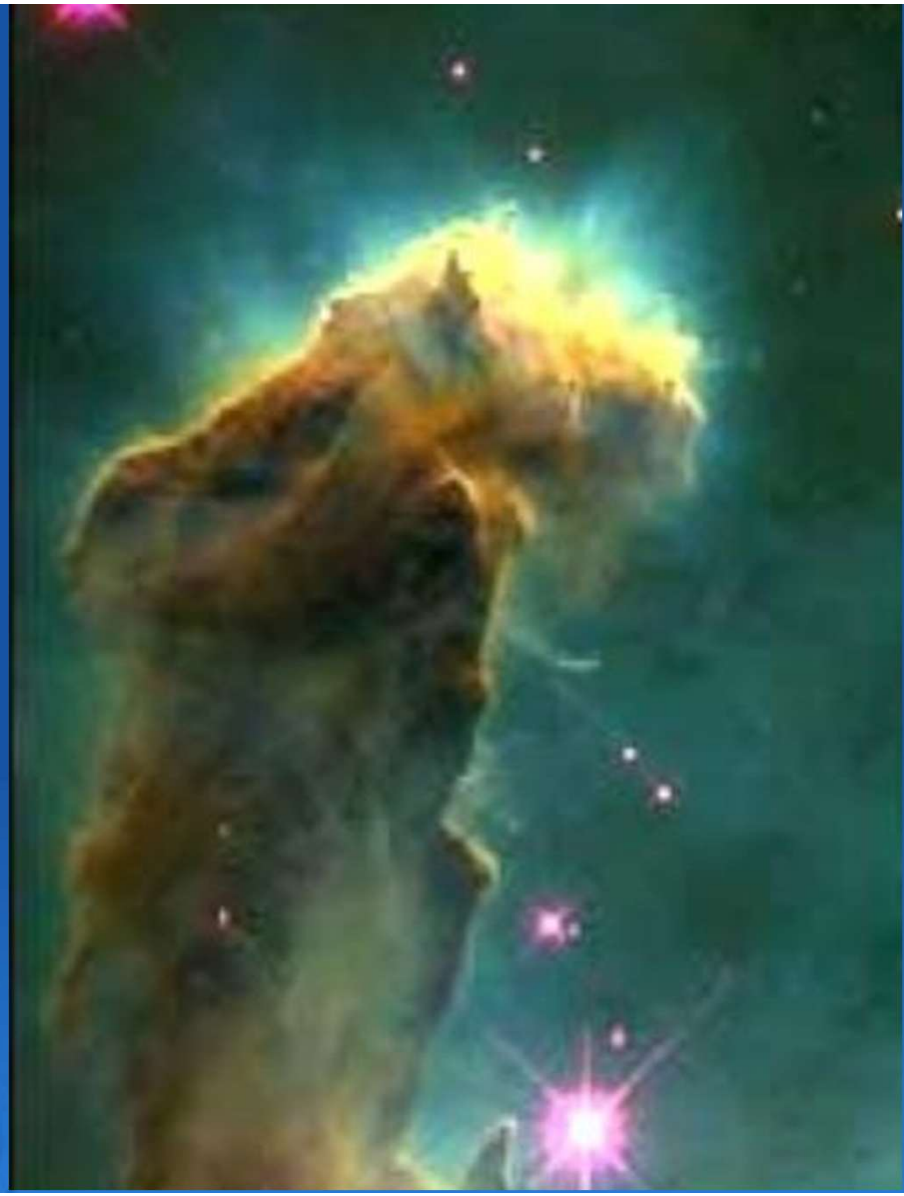

आरम्भ में मृत्यु नहीं थी

- प्रकृति के नियम इस प्रकार बनाए गए थे कि सब कुछ सदा के लिए बना रहे
- किसी समय यह बदल गया
- मृत्यु और क्षय कब ब्रह्मांड में प्रवेश कर गए?
- दो अलग-अलग घटनाएँ हुईं:

  १) लूसिफर (शैतान) का पतन
  २) मनुष्य का पतन (आदम और हव्वा)

पैटर्न
(प्रकार)

- **<u>शैतान का पतन</u>**
  परमेश्वर ने ब्रह्मांड के संचालन का तरीका बदल दिया। निर्जीव वस्तुओं में क्षय और ह्रास आरम्भ हो गया।

- **<u>आदम और हव्वा का पतन</u>**
  सभी जीवित प्राणियों में मृत्यु आ गई।

- सब कुछ मर रहा है और क्षय की ओर जा रहा है
- आध्यात्मिक रूप से बुराई को खोल दिया गया
- अब एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता थी!

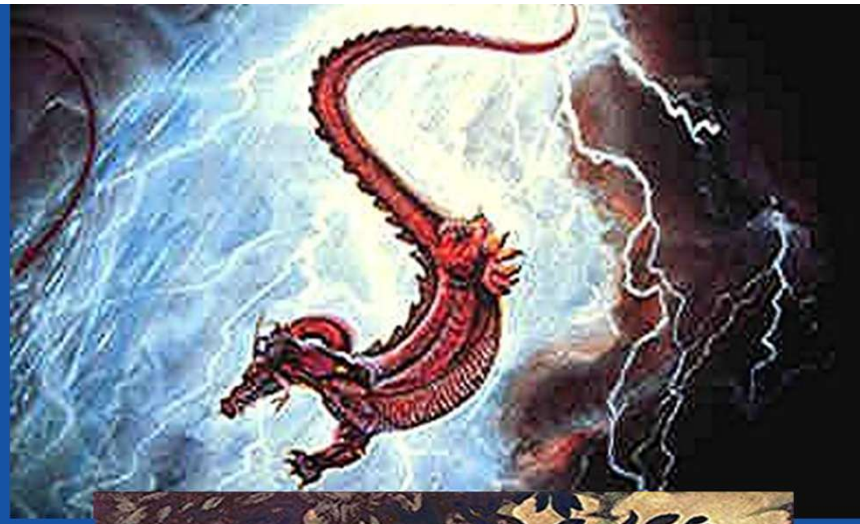

उदाहरण:गुरुत्वाकर्षण को वाचा के रूप में समझना

- गुरुत्वाकर्षण प्रकृति का एक स्थायी नियम है
- यह हमें पृथ्वी से बाँधे रखता है, और चन्द्रमा को पृथ्वी की परिक्रमा कराता है
- जीवन गुरुत्वाकर्षण पर निर्भर है!
- यदि गुरुत्वाकर्षण हटा लिया जाए, तो जैसा हम जानते हैं वैसा जीवन असम्भव हो जाएगा..... ब्रह्मांड पूरी तरह भिन्न हो जाएगा
- जब पाप स्वर्ग में प्रवेश कर गया, और फिर मनुष्य में प्रवेश कर गया, तो प्रकृति के नियम बदल गए
- जब परमेश्वर कोई वाचा स्थापित करता है, तो आध्यात्मिक और भौतिक ब्रह्मांड फिर कभी पहले जैसा नहीं रहता

मनुष्यों ने परमेश्वर की वाचा के स्वरूप को अपनाया

- ब्रित शब्द का सबसे शाब्दिक अर्थ है – काटना या विभाजित करना
- भुजाएँ काटी जाती थीं, और रक्त को मिलाया जाता था
- देवता के सामने शपथ ली जाती थी
- रक्त और परमेश्वर – वाचा बनाने का केंद्रबिन्दु था

शुओं को काटकर दो भागों में विभाजित किया जाता था

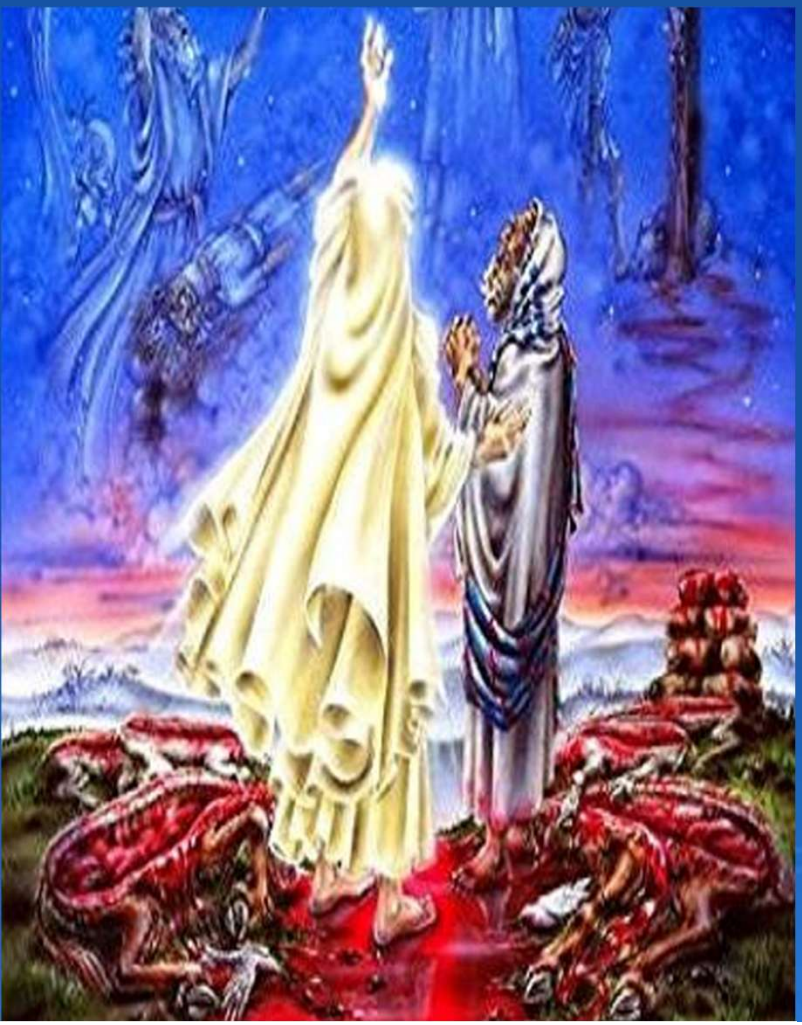

- प्रतिभागी कटे हुए टुकड़ों के बीच से चलकर गुजरते थे
- रक्त बहुत महत्वपूर्ण था, क्योंकि जीवन रक्त में है
- वाचा के भोजन के रूप में प्रायः नमक और रोटी खाई जाती थी
- नमक की वाचा
- नमक शान्ति का प्रतीक था

अब्राहम को बुलाया गया, और उसे स्थायी वाचा दी गई

- इसका अर्थ है कि यह वाचा सदा के लिए है!
- आज हमारे लिए सबसे महत्वपूर्ण बात यह समझना है कि:

  "...जो तुझे श्राप देगा, उसे मैं श्राप दूँगा, और जो तुझे आशीष देगा, उसे मैं आशीष दूँगा....."
- अब्राहम को दी गई सभी प्रतिज्ञाएँ आज भी पूर्ण रूप से अक्षुण्ण हैं
- सम्पूर्ण ब्रह्मांड इस वाचा को पूरा करने के लिए सूक्ष्म रूप से तैयार किया गया है

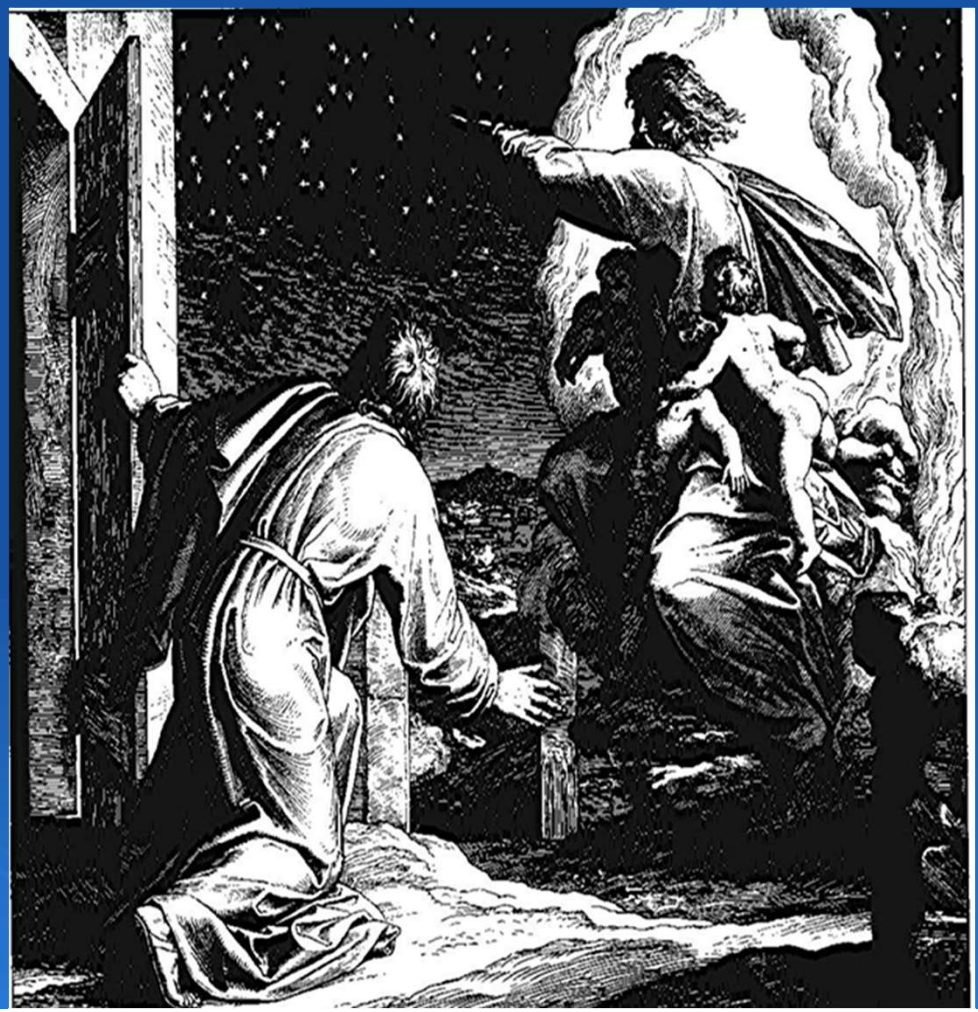

तुम कहाँ खड़े हो?

- इस्राएल और यहूदी लोग अब्राहम की वाचा के वारिस हैं
- वाचा इसहाक के द्वारा दी गई, इश्माएल के द्वारा नहीं
- इस्राएल और यहूदी लोगों का समर्थन करना हमारा कर्तव्य है!
- इसका अर्थ यह नहीं है कि हम उनके हर काम से सहमत हों
- उनके साथ खड़े होओ, उन्हें प्रेम करो, उन्हें सांत्वना दो, उनकी सहायता करो
- वे अभी भी परमेश्वर की चुनी हुई प्रजा हैं